भारत के ६८ वें स्वतंत्रता दिवस की पूर्व संध्या पर पाटण जिले में राज्य सरकार द्वारा आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम में गुजरात के परम सम्माननीय राज्यपाल श्री ओम प्रकाश कोहली जी का उद्बोधन ।

दिनांक: १४–८–२०१४	**स्थल:** हेमचंद्राचार्य उत्तर गुजरात युनिवर्सिटी ग्राउन्ड, पाटण
समय : सायंकाल ७–०० बजे	

- सम्माननीय श्रीमती आनंदीबहन पटेलजी, मुख्यमंत्री, गुजरात सरकार
- सम्माननीय श्री रमणलाल वोराजी , प्रभारी मंत्रीश्री, पाटण
- आदरणीय श्री वरेश सिन्हाजी, मुख्य सचिव, गुजरात सरकार,
- उपस्थित महानुभावों, प्रतिष्ठित नागरिकों एवम\ राज्य के वरिष्ठ अधिकारीगण।

भारत के ६८वें स्वतंत्रता दिवस की पूर्व संध्या पर पाटण जिले में राज्य सरकार द्वारा आयोजित इस सांस्कृतिक कार्यक्रम में आप सभी के बीच में उपस्थित रहने का मुझे अवसर मिला है, इसकी मुझे अत्यंत खुशी है।

मुझे ज्ञात है कि पिछले कई वर्षों से स्वतंत्रता दिवस तथा गणतंत्र दिवस जैसे राष्ट्रीय पर्व राज्य सरकार द्वारा राज्य के विभिन्न जिलों में मनाये जाते हैं। इसी परंपरा के भाग स्वरूप इस वर्ष के स्वतंत्रता दिवस का पर्व पाटण जिले में मनाया जा रहा है, यह एक बड़ी खुशी की बात है। इसी बहाने आप सभी से मिलने का मुझे सुअवसर प्राप्त हुआ है, इसका मुझे आनंद है। इस नई परम्परा के लिए मैं राज्य सरकार को बहुत साधुवाद देता हूँ।

पाटण नगरी ऐतिहासिक, धार्मिक एवम\पुरातत्व दृष्टि से जग प्रसिद्ध है। यह एक गर्व की बात है कि कई वर्ष पूर्व पाटण नगरी गुजरात की राजधानी हुआ करती थी तथा **''अणहिलपुर पाटण''** के नाम से जानी जाती थी । साहित्य, स्थापत्य, कला जैसे कई क्षेत्रों में सोलंकी युग के प्रजावत्सल राजाओं ने ***''सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय''*** की भावना को चरितार्थ करते हुए कई लोकोपयोगी कार्य करके इतिहास के पन्नों में अपना नाम स्वर्ण अक्षरों में अंकित किया था। उदाहरण के तौर पर इन्होंने 7000 से ज्यादा वाव (Step-Wells) तथा 5000 से ज्यादा तालाबों का जनहित में निर्माण करके यहाँ की प्रजा को विपुल मात्रा में जल भंडार उपलब्ध करवाये थे। ***आचार्य हेमचद्रंाचार्य*** अपने समय के व्याकरण, छन्द–शास्त्र एवम\अलंकार–शास्त्र के प्रकांड पंडित माने जाते थे। अपने स्वर्णिम काल में पाटण हिन्दु, मुस्लिम तथा जैन

धर्मावलंबियों के यात्राधाम के रूप में भी जग प्रसिद्ध था। केवल पाटण में हीं 200 से ज्यादा मन्दिर, 100 से ज्यादा जिनालय एवम\200 से ज्यादा मस्जिद तथा दरगाह आज भी मौजूद हैं। अभी हाल ही में जून २०१४ में ***राणी की वाव*** को UNESCO द्वारा ***"विश्व विरासत स्थल"*** की यादी में सम्मिलित किया गया है। कहा जाता है कि इस वाव को सन\1063 में सोलंकी शासन के राजा ***भीमदेव प्रथम*** की स्मृति में उनकी पत्नि ***रानी उदयमती*** ने बनवाया था। वाव की दीवारों एवम\स्तंभों पर अधिकांश नक्शीयाँ तथा रामावतार, बामनावतार, महिषासुर मर्दिनी, कल्कि इत्यादि इश्वरीय अवतारों के विभिन्न रूपों में भगवान विष्णु के विभिन्न स्वरूपों का आलेखन बहुत ही कलात्मक ढंग से किया गया है। इसके अलावा रूद्र महालय, सहस्त्रलिंग तालाब तथा हेमचंद्राचार्य जैन ज्ञान मंदिर जैसे स्थान भी पाटण की प्रभुता को बढ़ाते हैं।

मुझे इस बात की भी खुशी है कि आज यहाँ विभिन्न क्षेत्रों में अमूल्य योगदान देनेवाले कई महानुभावों का नागरिक सम्मान भी किया गया है। उन सभी महानुभावों को मैं हार्दिक बधाई देता हूँ । ऐसे महानुभावों का सम्मान वास्तव में पूरे समाज के कर्मठ व्यक्तियों का सम्मान है और इससे हमारे अन्य कर्मठ नागरिकों को भी समाज और देश के लिये कुछ विशेष करने की प्रेरणा मिलेगी, ऐसा मेरा मानना है।

कवि कुलगुरू कलिदास ने अपने जग प्रसिद्ध नाटक ***''अभिज्ञानशाकुन्तलम्''*** में कहा था कि ***''उत्सव प्रियाः खलु मनुष्याः''*** अर्थात\''***आम जनता को उत्सव हमेशा प्रिय ही होते हैं***''। राज्य सरकार के द्वारा आज यहाँ ***''पाटण की प्रभुता''*** नामक सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया है। प्रसिद्ध इतिहासकार स्व० श्री कनैयालाल मुन्शी ने जिसे गुजरात की अस्मिता का आधारस्तंभ माना था ऐसी ***अणहिलपुर पाटण*** की अद\भुत गाथा को

उजागर करनेवाले इस कार्यक्रम को देखनेवाले सभी को पाटण की भव्यता की झांखी जरूर मिलेगी। साथ–ही–साथ ***''जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरियसी''*** अर्थात\ ***''माँ तथा जन्मभूमि स्वर्ग से भी बढ़कर होती है''*** इस भावना की अनुभूति भी यहाँ के प्रत्येक पाटणवासी को अवश्य होगी, ऐसा भी मेरा मानना है।

राज्य सरकार द्वारा आयोजित आज का यह सांस्कृतिक कार्यक्रम केवल एक मनोरंजन मात्र नहीं है, बल्कि गुजरात की छ करोड़ जनता को एक सूत्र में बाँधनेवाली एक मज़बूत कड़ी है, ऐसा मैं मानता हूँ।

मेरे हृदय में गुजरात के लिए पहले से ही आदर रहा है। हमारे स्वतंत्रता संग्राम के दौरान राष्ट्रपिता महात्मा गाँधीजी तथा लौहपुरूष श्री सरदार वल्लभभाई पटेल जैसी वंदनीय राष्ट्रीय प्रतिभाओं ने गुजरात को अपनी कर्मभूमि बनाया था, यह बात प्रत्येक गुर्जरवासी के

लिये गरिमा की द्योतक है। प्राचीन काल से लेकर आज तक माँ गूर्जरी ने कई संतों, महंतों, दाताओं, उद्योगपतियों, सूरमाओं, तपस्वियों और कर्तव्यनिष्ठ सपूतों की भेंट भारतमाता के चरणों में धरी है। यहाँ की विविधतापूर्ण कला और बेजोड़ दस्तकारी, धार्मिक स्थान एवम\ पर्यटन स्थल, वन तथा दरियाई संपति की सभी तारीफ करते हैं। इन सभी के उपरांत यहाँ के सौम्यता तथा शालीनतापूर्ण व्यवहार करनेवाले तथा दीर्घ व्यापारिक कुशलता से पूरे विश्व में गुजरात का नाम रोशन करनेवाले गुजराती भाई–बहनों ने पूरे विश्व को हमेशा से मोहित किया है, इस सच्चाई का भी मैं हृदय से स्वीकार करता हूँ।

"सबका साथ, सबका विकास" जैसे मंत्र के मंत्रद्रष्टा हमारे देश के आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्रभाई मोदी जी आज जब पूरे विश्व में भारत का नाम उज्जवल करने के भगीरथ प्रयास कर रहे हैं, ऐसे अवसर पर भारत के ६८वें स्वतंत्रता दिवस के राष्ट्रीय पर्व को

गुजरात में आप सभी के साथ मनाते हुये मैं अपने आपको गौरवान्वित अनुभव कर रहा हूँ । ऐसे सुनहरे मौके पर आपके बीच आकर आप सभी से मिलने का तथा आपको उद्बोधन करने का मुझे जो अवसर मिला, इसके लिये मैं राज्य सरकार के प्रति आभार प्रकट करता हूँ।

अंत में, विशेष कुछ न कहते हुये स्वतंत्रता दिवस के इस पावन पर्व पर हम सभी लोकतंत्र के प्रति पुनः समर्पित हों तथा राज्य तथा देश की प्रगति तथा समृद्धि में बढोतरी हेतु अपना योगदान देने के लिये प्रतिबद्ध हों, इसी शुभकामना के साथ आप सभी को नमस्कार करते हुये अपना वक्तव्य समाप्त करता हूँ।

धन्यवाद । जय जय गरवी गुजरात । जय हिन्द ।